बी0ए0– द्वितीय वर्ष – विषय – राजनीति विज्ञान
प्रथम प्रश्न पत्र– पाठ्यक्रम का शीर्षक – ''पाश्चात्य राजनीतिक विचारक''

''प्रमुख पाश्चात्य राजनीतिक विचारक''

क्र.सं.	विचारक	सम्बन्धित मत	प्रमुख ग्रन्थ
1	प्लेटो	1. आदर्श राज्य 2. दार्शनिक राज्य	1. रिपब्लिक 2. स्टेट्समैन 3. लॉज
2	अरस्तू	1. राज्य की उत्पत्ति का विकासवादी सिद्धान्त 2. संविधान राज्य	1. पॉलिटिक्स 2. एथेन्स का संविधान
3	मैकियावली	1. राज्य की धर्म व नैतिकता से पृथकता 2. शक्तिवादी व व्यवहारिक राजनीति के प्रणेता	1. प्रिंस 2. डिसकोर्सेज
4	थॉमस हौन्स	1. राज्य की उत्पत्ति का सामाजिक समझौता सिद्धान्त 2. सम्प्रभुता की व्याख्या	1. लेबायायन 2. डी सिवे
5	जॉन लॉक	1. राज्य की उत्पत्ति का सामाजिक समझौता सिद्धान्त 2. प्राकृतिक कानून व प्राकृतिक अधिकार	1. शासन पर दो निबंध 2. मानव व्यवहार सम्बन्धी निबंध
6	जीन जेक्स रुसो	1. राज्य की उत्पत्ति का सामाजिक समझौता सिद्धान्त	2. सामाजिक अनुबन्ध
7	जेरेपी बेन्थम	1. उपयोगितावाद 2. स्वतंत्रता विरोध	1. **Fragments of Government** 2. **Introduction of the principles of Morals and Legistation**
8	जे.एस.मिल	1. उपयोगितावाद 2. स्वतंत्रता समर्थक	1. **On Liberty (स्वतन्त्रता)** 2. **Consideration on Representative Government (प्रति निध्यात्मक शासन पर विचार)**

9	थॉमस हिलग्रीन	1. आदर्शवाद और उदारवाद का समन्वयकर्ता	1. **Liberty Legistation and Freedom of Contract (उदार व्यवस्थापन एवं अनुबन्ध की स्वतन्त्रता)**
10	कार्लमार्क्स	1. साम्यवाद 2. द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद	1. **The Communist Manifesto (साम्यवादी घोषणा पत्र)** 2. **Das Capital (पूँजी)**
11	जीन बोदां	1. सम्प्रभुता विषयक सिद्धान्त	1- दे रिपब्लिक
12	हीगल	1. आदर्शवाद 2. द्वन्द्वात्मक पद्धति	1. **Encyclopedia of the Philosphical Science** 2. **Science of Logic (तर्क विज्ञान)** 3. फिलासफी ऑफ लॉ
13	लास्की	1. लोकतांत्रिक समाजवाद	1- **A Grammer of Politics (राजनीति के मूल तत्व)**

अरस्तू

अरस्तू के विचार कल्पना पर आधारित नहीं है। अरस्तू का दृष्टिकोण वैज्ञानिक है। उसके विचार सुस्पष्ट, तर्कसंगत तथा व्यवहारिक है। राजनीति विज्ञान को स्वतंत्र स्थिति प्राप्त होना अरस्तू की ही देन है। इन बातों के आधार पर ही मैक्सी ने अरस्तू को प्रथम राजनीतिक वैज्ञानिक कहा है। अरस्तू की पॉलिटिक्स आठ भागों में विभाजित है।

अरस्तू ने वैज्ञानिक पद्धतियों का सहारा लेकर यह निष्कर्ष भी निकाले –

1. क्रान्ति का मूल कारण आर्थिक असमानता होती हैं।
2. व्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रतिबंध होना आवश्यक है।
3. संप्रभुता का निवास संविधान में होता है।
4. शासन केन्द्रीयकृत न होकर विकेन्द्रित होना चाहिए।
5. लोकहित की उपेक्षा करने पर शासन का रुप विकृत हो जाता है।

अरस्तू के परिवार से सम्बन्धित विचार :–

1. अरस्तू प्लेटो की तरह परिवार सम्बन्धी विचारों में स्त्रियों के साम्यवाद को स्वीकार नहीं करता है।
2. वह परिवार संस्था को स्वाभाविक, आवश्यक और उपयोगी मानता है।
3. उसके अनुसार परिवार आधारभूत संस्था है, जो मानव जीवन, समाज और राज्य का मूल है।
4. परिवार समाज और राज्य का मूल है।
5. अरस्तू– ''स्त्री–पुरुष तथा स्वामी और दास के योग से जो समूह बनता है, वह परिवार है।
6. विकसित समुदाय
7. प्राकृतिक संस्था
8. जन्म से ही सदस्यता प्राप्त
9. परिवार विकसित समुदायों में सबसे प्रमुख समुदाय है, जो अनुबन्ध द्वारा अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संगठित किया जाता है।
10. परिवार राज्य की उत्पत्ति का आधार है।
11. परिवार को अरस्तू एक प्राकृतिक संस्था मानता है, जिसका अस्तित्व सन्तानोत्पत्ति, सन्तान का पालन–पोषण तथा प्रेम, सहयोग, त्याग आदि से जुड़ा हुआ है।
12. यह संस्था विवाह से बनती है तथा व्यक्ति को इसकी सदस्यता जन्म से ही प्राप्त हो जाती है। परिवार ने ही राज्य की उत्पत्ति को संभव बनाया है।
13. व्यक्ति के लिए परिवार इसलिए भी आवश्यक है कि वह उसकी प्राथमिक आवश्यकता की पूर्ति करता है। यह मानव विकास का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

अरस्तू के क्रान्ति से सम्बन्धित विचार :–

1. पॉलिटिक्स की 5वीं पुस्तक में क्रान्ति का विवेचन है।
2. क्रान्ति के बीज मनुष्य के मन में उगते हैं।
3. अरस्तू– ''विद्रोह का कारण सदैव असमानता में पाया जाता है।''
4. राज्य, संविधान या शासन–सत्ता में होने वाला प्रत्येक परिवर्तन क्रान्ति है।
5. अरस्तू के समय में यूनान के राज्यों में बहुत अधिक अस्थिरता व्याप्त थी। अरस्तू ने स्वयं इस अस्थिरता के दुष्परिणाम देखे थे। अतः उसने इस अस्थिरता को दूर करने के उपाय बताये।
6. उसने 158 संविधान का अध्ययन करने बाद परिपक्व राजनीतिक बुद्धिमत्ता के आधार पर विवेचन प्रस्तुत किया।

7. सेवाइन– "इस विषय से सम्बन्धित पॉलिटिक्स के द्वन्द्व, उसकी राजनीतिक सूझबूझ एवं यूनानी नगर राज्यों के शासन का अधिकार पूर्ण ज्ञान प्रकट करते हैं।
8. क्रान्ति के रुप –

1. शासन व्यवस्था का परिवर्तन जैसे धनिक तंत्र से भीड़ तंत्र
2. रुप सुधार– जन तंत्र प्रणाली मे घटा–बढ़ी।
3. पदाधिकारियों का परिवर्तन – शासकीय पदाधिकारियों का परिवर्तन।

9. क्रान्ति के कारण –

सामान्य कारण – विषमता
अन्याय

विशेष कारण – घृणा
प्रमाद आलस्य
अनुचित सम्मान
उच्चवर्गीय षड्यंत्र
विजातीय तत्व
शत्रुओं से सांठ–गांठ कर
श्रेष्ठता की भावना
शासकों की धृष्टता

संविधानों का वर्गीकरण		
संख्या का आधार	नैतिक आधार	
शासन करने वाले व्यक्तियों की संख्या	सर्वोच्च सत्ता के संचालन का उद्देश्य	
	शासन का स्वभाविक रुप	विकृत रुप
एक (व्यक्ति) अल्पसंख्यक (व्यक्ति) बहुसंख्यक (व्यक्ति)	एक तंत्र या राज तंत्र कुलीन तंत्र बहु तंत्र या संवैधानिक तंत्र	निरंकुश तंत्र वर्ग तंत्र या धनिक तंत्र भीड़ तंत्र या प्रजा तंत्र